17 जून 2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 06
जून (द्वितीय), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)
संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

54वें वीतराग-विज्ञान शिक्षिण-प्रशिक्षण शिविर का....

दीक्षान्त व समापन समारोह सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ श्री पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में 1 जून को प्रात: नित्य-नियम पूजन एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर की अध्यक्षता में दीक्षान्त एवं समापन समारोह सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि श्री प्रवीणभाई, मलाड़ एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुलेखजी पिताश्री अश्वनीजी, दिल्ली के अतिरिक्त पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, बाल ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित महावीरजी उदयपुर, पण्डित पीयूषजी जयपुर, पण्डित अभयजी खैरागढ़, पण्डित निलयजी आगरा, पण्डित मनीषजी 'कहान' जयपुर, पण्डित गणतंत्रजी आगरा, पण्डित सचिन्द्रजी मंगलायतन आदि समस्त अध्यापकगण एवं ट्रस्ट के सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे। (शेष पृष्ठ 8 पर...)

टोरंटो एवं ह्यूस्टन में धर्मप्रभावना

1) टोरंटो (कनाड़ा) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में 3 से 9 जून तक अध्यात्मवेत्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। इस अवसर पर प्रातः प्रक्षाल एवं नित्य-नियम पूजन के अतिरिक्त संयमप्रकाश ग्रंथ पर प्रवचन एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति तथा समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका) विषय पर व्याख्यानों के पश्चात् शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

04 जून को श्रुतपंचमी के अवसर पर विशिष्ट प्रासंगिक व्याख्यान का भी लाभ मिला। मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका के साधर्मियों के लिए भी विशेष व्याख्यानमाला आयोजित की गई।

समस्त कार्यक्रम श्री ज्ञानचन्दजी जैन, श्री दीपकभाई, श्री सुधीरभाई, श्री राजपाटीलजी के निर्देशन में श्री संजयजी जैन एवं श्री मुकेशजी शाह के संयोजन में सम्पन्न हुए।

2) ह्यूस्टन (अमेरिका) : यहाँ जैन सॉसाइटी ऑफ ह्यूस्टन द्वारा जैन मन्दिर में दिनांक 10 से 12 जून तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा समयसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ के आधार से सम्यक्त्व सन्मुख जीवों की विशेष चर्चा की गई। दो वर्ष के अन्तराल के बाद पण्डितजी के पदार्पण से लोगों में भारी उत्साह था; अत: भारी संख्या में उपस्थित होकर जनसमुदाय ने भरपूर लाभ लिया। साथ ही ऑनलाइन माध्यम से भी हजारों लोग जुड़े।

परीक्षा परिणाम घोषित

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्रों की लौकिक परीक्षा के अन्तर्गत...

● **उपाध्याय वरिष्ठ** कक्षा का परीक्षा परिणाम माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा घोषित किया गया।

अंकित जैन पिताश्री अनिलजी जैन, कुटोरा ने प्रथम स्थान (92.6), स्वस्ति जैन पिताश्री पवनजी शास्त्री, किशनगढ़ ने द्वितीय स्थान (92.4) व अन्विता जैन पिताश्री अध्यात्मप्रकाशजी शास्त्री, दौसा ने तृतीय स्थान (91.4) प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि सभी छात्र उत्तीर्ण हुए। 37 छात्रों में से 12 छात्रों ने 85-100%, 10 छात्रों ने 75-85% तथा 9 छात्रों ने 60 से 75% अंक प्राप्त किए।

● **उपाध्याय कनिष्ठ** का परीक्षा परिणाम श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सांगानेर द्वारा घोषित किया गया।

अनिका जैन पिताश्री अश्वनीजी जैन, दिल्ली ने प्रथम (88.7), आयुष जैन पिताश्री राजेशजी, उदयपुर ने द्वितीय (88.2) व आर्जव जैन पिताश्री आशीषजी शास्त्री, खड़ैरी ने तृतीय (87.2) स्थान प्राप्त किया। 28 छात्रों में से 5 छात्रों ने 85-100%, 11 छात्रों ने 75-85% तथा 12 छात्रों ने 60-75% अंक प्राप्त किए।

एतदर्थ जैन पथप्रदर्शक परिवार विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए तत्त्वप्रचार के क्षेत्र में अग्रणी रहने की भावना भाता है।

37 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

(गतांक से आगे...)

सप्ततत्त्व का अन्यथा स्वरूप...

शास्त्रों में तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् अर्थात् तत्त्वार्थ के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा है, इसलिए साततत्त्वों को जानता है, उनके नाम जानता है, उनकी परिभाषाएँ जानता है, स्वयं भी पढ़ता है और दूसरों को भी पढ़ाता है; लेकिन पण्डितजी कहते हैं कि तत्त्वों का भावभासन नहीं करता, भावभासन का विशेष महत्त्व है। भावभासन के बिना काम नहीं चलेगा। भावभासन अर्थात् फीलिंग (अनुभव)। घर-गृहस्थी के कार्यों में तो हमें बहुत भावभासन होता है; लेकिन तत्त्वों के सम्बन्ध में हमें भावभासन नहीं है। बिना भावभासन के गाड़ी नहीं चला सकते, टकरा जाएगी। भावभासन के बिना रोटी नहीं बना सकते, रोटी जल जाएगी। चाय बनाते समय यदि भावभासन न हो तो गैस बंद नहीं कर सकेगा। रोड पार करते समय हमें भावभासन होता है कि हमें रोड के उस पार जाने में कितना समय लगेगा? सामने से आ रही गाड़ी कितनी स्पीड से आ रही है और उसे हम तक पहुँचने में कितना समय लगेगा? ऐसा भावभासन होने पर ही रोड पार की जा सकती है।

पण्डितजी एक उदाहरण के माध्यम से भावभासन को समझाते हैं। जैसे - कोई व्यक्ति संगीत के स्वरादि को जानने के लिए शास्त्रों को पढ़े, स्वर, ग्राम, राग, ताल-तान आदि के भेद याद कर ले; परन्तु स्वरादि नहीं पहचाने तो अन्य स्वरादि को अन्य स्वरादिरूप मानता है। यदि सही भी माने तो निर्णय के बिना मानता है। उसीप्रकार कोई जीव सम्यक्त्व के लिए तत्त्वों को सीखे, तत्त्वों के भेद-प्रभेद याद करे; परन्तु तत्त्वों को नहीं पहचाने तो अन्य तत्त्वों को अन्य तत्त्वरूप मानता है। यदि सही भी माने तो निर्णय के बिना मानता है। अतः मात्र शास्त्रज्ञान हो जाने से कार्य की सिद्धि नहीं होती। किताबों को पढ़-पढ़ कर कोई अच्छा वकील या अच्छा डॉक्टर नहीं बन सकता। लौकिक क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करने के लिए अनुभव (भावभासन) चाहिए।

यह मैं हूँ और यह मैं नहीं हूँ, ये भाव मेरे हैं और ये भाव मेरे नहीं है, ये भाव बुरे हैं और मेरा अनिष्ट करने वाले हैं - ऐसा भावभासन होने पर ही सम्यक्त्वरूपी कार्य की सिद्धि होती है। जिनका क्षयोपशम ज्ञान बहुत मंद था, जिन्हें जीवादि सात तत्त्वों के नाम मात्र भी याद नहीं होते थे - ऐसे शिवभूति मुनिराज ने एकमात्र इस भावभासन के आधार से निर्वाण की प्राप्ति कर ली।

कुन्दकुन्दाचार्य देव भावपाहुड़ में लिखते हैं कि -

तुसमासं घोसंतो भाव विसुद्धो महाणुभावो य।
णामेण य सिवभूई केवलणाणी फुडं जाओ।।

जीव-अजीवतत्त्व का अन्यथा स्वरूप...

जीवतत्त्व के श्रद्धा के नाम पर शास्त्रों से त्रस-स्थावर और गुणस्थान-मार्गणास्थानादि भेद पढ़ता है। अजीवतत्त्व के श्रद्धान के नाम पर पुद्गल के वर्णादि और धर्म-अधर्मादि को जानता है; किन्तु भेदविज्ञान व वीतरागदशा के कारणभूत निरूपण को नहीं पहिचानता। गुणस्थानादि का अध्ययन तो करता है; लेकिन गुणस्थानातीत भगवान आत्मा को नहीं देखता। 8 कर्मों के भेद-प्रभेद तो पढ़ता है; लेकिन अष्टकर्मों से रहित भगवान आत्मा दृष्टि में नहीं लेता।

यदि शास्त्रों के अनुसार सच्चा स्वरूप जान भी ले तो अपने को आपरूप जानकर पर का अंश अपने में नहीं मिलाना और अपना अंश पर में नहीं मिलाना - ऐसा सच्चा श्रद्धान नहीं करता।

हमने किसी स्वाध्याय प्रेमी से पूछा कि आपकी उम्र कितनी है? तो वह कहता है कि मैं अनादि-निधन, अजर-अमर आत्मतत्त्व हूँ। फिर हमने पूछा कि आज-कल बाहर दिखाई नहीं देते? तो कहता है कि बहुत कोरोना फैल रहा है, हमें कुछ हो गया तो।

अरे भाई! अपने को अनादि-निधन आत्मा मानने पर कोरोना का भय कैसा? इसप्रकार यह अपने को अनादि-निधन जानता तो है; परन्तु उस अनादि-निधनपने का भावभासन नहीं करता।

जब शास्त्र सभाओं में आत्मतत्त्व का कथन करता है तो किसी और का ही कथन कर रहा हो ऐसी बातें करता है; परन्तु यह आत्मतत्त्व मैं ही हूँ - ऐसा भावभासन नहीं करता।

कभी आत्मा और शरीर की भिन्नता बतलाता है तो किसी और को किसी और से भिन्न बता रहा हो ऐसा लगता है; परन्तु मैं इस शरीर से भिन्न हूँ - ऐसा भावभासन नहीं करता।

पर्याय में जीव और पुद्गल की परस्पर में अनेक क्रियाएँ होती हैं, उन्हें दोनों के मिलाप से उत्पन्न हुई मानता है। जैसे - भोजन कौन करता है? यदि आत्मा करता है तो सिद्धों को भी करना चाहिए और यदि शरीर करता है तो मुर्दे को भी करना चाहिए; अतः दोनों करते हैं - ऐसा मानता है। यह जीव की क्रिया है, उसमें पुद्गल निमित्त है और यह पुद्गल की क्रिया है, उसमें जीव निमित्त है - ऐसा भावभासन नहीं करता।

इसप्रकार जीव-अजीव तत्त्वसम्बन्धी भूल का वर्णन किया।

आस्रवतत्त्व का अन्यथा स्वरूप...

आस्रवतत्त्व के नाम पर हिंसादि रूप पापास्रव को तो बुरा जानता है और अहिंसादि रूप पुण्यास्रव को भला जानता है; परन्तु यह दोनों ही तो कर्म बंधन के कारण हैं - ऐसा नहीं जानता।

पण्डितजी इस प्रकरण में एक गजब का तर्क देते हुए कहते हैं कि हिंसा में मारने की बुद्धि है; परन्तु आयु पूर्ण हुए बिना वह मर नहीं सकता तथा दूसरी ओर अहिंसा में बचाने की बुद्धि है; परन्तु आयु समाप्त हो जाने पर वह बच नहीं सकता। इसप्रकार दोनों ही तरह के परिणाम निरर्थक ही रहे; क्योंकि इसके मारने या बचाने के परिणामों से कोई भी जीव मरता या बचता नहीं है। यह तो अपने मारने और बचाने के परिणाम से स्वयं ही पाप-पुण्य बांधता है। निर्बन्ध तो तब होगा, जब वीतरागी होकर ज्ञाता-दृष्टा रहेगा।

पण्डितजी कहते हैं कि जब-तक ज्ञाता-दृष्टा रूप वीतराग अवस्था ना हो तब-तक प्रशस्त रागरूप प्रवृत्ति करो, शुभास्रव रूप प्रवर्तन करो, अहिंसा-सत्य-अचौर्यरूप परिणाम रखो; परन्तु **श्रद्धान तो ऐसा रखो कि यह भी बंध का कारण है, हेय है, श्रद्धान में इसे मोक्षमार्ग जाने तो मिथ्यादृष्टि ही होता है।**

मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग से सम्बन्धित भूलों की चर्चा करते हुए कहते हैं कि इनके बाह्य स्वरूप को तो मानता है; परन्तु अन्तरंग रूप को नहीं पहिचानता। मिथ्यात्व के सम्बन्ध में गृहीत मिथ्यात्व को ही मिथ्यात्व मानता है, अगृहीत को नहीं पहिचानता। अविरति के सम्बन्ध में बाह्य प्रवृत्ति के रुक जाने को ही अविरति मानता है; परन्तु हिंसा में प्रमाद परिणति व विषयों के सेवन में अन्तरंग में बैठी हुई अभिलाषा मूल है, इच्छा, आसक्ति मूल है, उसे नहीं पहिचानता। अभिप्राय में जो क्रोधादि बसे हैं, उन्हें नहीं पहिचानता। कितने ही लोग दुनिया में ऐसे मिलेंगे जिन्हें आपने कभी गुस्सा करते नहीं देखा होगा या जो कभी गुस्सा नहीं करते होंगे तो क्या वे भगवान हैं? क्या वे बहुत बड़े धर्मात्मा हैं? नहीं, क्रोध व्यक्त नहीं होने पर भी वे क्रोध से सहित ही हैं।

ये बहुत सूक्ष्म भूलें हैं। पण्डित टोडरमलजी ने सर्वज्ञ परमात्मा के अंतर में बैठकर ये रहस्य निकाले हैं।

राग-द्वेष-मोहरूप आस्रव भाव हैं, उनका तो नाश करने की चिंता नहीं करता और बाह्यक्रिया अथवा बाह्यनिमित्त मिटाने का उपाय करता है तो उनके मिटाने से आस्रव नहीं मिटता। इसलिए जो अंतरंग अभिप्राय में मिथ्यात्वरूप रागादिभाव हैं, वे ही आस्रव हैं, उन्हें नहीं पहिचानता - इसप्रकार इसके आस्रवतत्त्व का भी सत्य श्रद्धा नहीं है। **(क्रमशः)**

सा विद्या या विमुक्तये

- पण्डित जिनकुमार शास्त्री

'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वह है, जो बंधनों से मुक्त करा दें। तनाव पैदा करना शिक्षा का उद्देश्य कदापि नहीं होना चाहिए। आज वर्तमान समय में शिक्षण-प्रक्रिया बहुउद्देशीय हो गयी है, इसीलिए पर्याप्त मात्रा में शिक्षण-संसाधनों के होने पर भी उसके समीचीन फल का प्रायः अभाव ही है। उद्देश्यविहीन प्रक्रिया तो असफल होती ही है, वहीं बहुउद्देशीय प्रक्रिया भी सफलता के शिखर तक नहीं पहुँचा पाती है।

खेद की बात है कि आज शिक्षण-प्रक्रिया का उद्देश्य ज्ञान-प्राप्ति से हटकर आजीविका मात्र रह गया है, शायद यही कारण है कि आज के शैक्षिक लोग भी मानवीय मूल्यों को खोते जा रहे हैं। उक्त बातें तो लौकिक शिक्षा के क्षेत्र में भी कही जा सकती हैं; परन्तु जब बात धार्मिक-शिक्षण की आती है तो यहाँ यह बातें और अधिक विचारणीय हो जाती हैं। यद्यपि शिक्षण एक त्रिमुखी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक-विषय-छात्र के समान योगदान की अपेक्षा रहती है; तथापि शिक्षक पर मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक जिम्मेदारी रहती है; क्योंकि शिक्षक ही वह माध्यम है जो कम संसाधनों से भी विषय के मर्म को छात्रों तक पहुँचा सकता है, उदाहरण के तौर पर देखते हैं तो हमारे नग्न दिगम्बर मुनिराजों ने बिना किसी संसाधनों के तीर्थंकरों की वाणी को हम तक सही मायने में पहुँचाया है।

यदि हम भी प्राप्त तत्त्वज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते हैं तो हमें भी पवित्र उद्देश्य से शिक्षण कार्य को समर्पण एवं लगन के साथ करना होगा, तभी विद्यार्थी भी मन लगाकर सुनेंगे। विषय तो आचार्यों ने दिया ही है, इसीलिए उसमें नवीन कुछ मेहनत नहीं करना है, बस आनन्द के साथ वीतरागी मार्ग का प्रतिपादन छात्रों के समक्ष करना है और उन्हें विश्वास दिलाना है कि यह मार्ग बहुत आनन्ददायक है, बिना किसी अपेक्षा के जीवन लगाने लायक है। इससे शिक्षा भी सार्थक होगी और शिक्षण-प्रक्रिया भी व्यवस्थित चलती रहेगी। सर्वज्ञ शासन जयवंत वर्ते। ●

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित भरत का अन्तर्द्वन्द्व महाकाव्य के सार पर आधारित एक छोटी-सी प्रस्तुति...

अन्तर्द्वन्द्व का सार

भरत का अन्तर्द्वन्द्व कहूँ या, कहूँ भारिल्ल की आत्मकथा।
ज्ञानियों का जीवन है सहज, नहीं होती इसमें कोई व्यथा।।
जैन धर्म के रतन की, हुकम ने कथा सुनाई है।
भरत-बाहुबली के जैसे, भव्य ये दोनों भाई हैं।।
भाईयों में होता कैसा प्रेम, ये इसमें बतलाया हैं।
लड़ना नहीं है सिखना, नहीं लड़ना सिखना है।।
चौथे गुंथानक की सुनो, बह्यान्तर दशा का संतुलन।
भूमिकानुसार परिवर्तन, आत्मा का चिंतन और मनन।।
भटकना नहीं सिखाया है, अटकना नहीं सिखाया है।
भले ही धीरे-धीरे चले, सन्मार्ग पर चलना सिखाया है।।
भरत का वैभव अबतक हमें, विभिन्न ग्रंथो में बताया है।
भरतजी घर में ही वैरागी, ये दादा ने समझाया है।।
मोक्षमार्गी भाईयों की प्रेमकथा, उनका वात्सल्य अपार।
लेना कुछ ना कोई चाहे, लुटाने को दोनों तैयार।।
मैं-मैं की बात नहीं, आप-आप की इसमें है बात।
भाई-भाई कैसे रहवे, कैसा होवे उनका साथ।।
भरत बाहुबली की तुलना, करना बिल्कुल सही नहीं।
दोनों केवली हो गए, अनन्त गुणों के दोनों धनी।।
यद्यपि घटना है प्राचीन, दृष्टिकोण एकदम है नया।
भाई तो लड़े कभी-भी नहीं, समझ में हमको ये आगया।।
उलझना नहीं सिखाया है, सुलझना हमें सिखाया है।
भाईयों की इस प्रेमकथा, का अद्भुत चित्रण आया है।।
दिव्यध्वनि से वंचित तो, चक्रवर्ती भी अभागे हैं।
सामान्यजनों को हो उपलब्ध, तो वे भी उनसे आगे है।।
चक्ररत्न की प्राप्ति को, जो छाती पर भार कहते।
ज्ञानी कैसे बोलो रहते, ज्ञानी देखों ऐसे रहते।।
राजनीति का उत्कृष्ट रूप, इसमें दिखलाया है।
मन और विश्वास जीत, जीतना सिखलाया है।।
बड़े दादा के प्रति सुनो, छोटे दादा का प्रेम अपार।
मोहांश नहीं दिखता, किन्तु वात्सल्य अपम्पार।।
यदि वात्सल्य समझना हो, समझना होगा उनका भाव।
आँसुओ की कीमत का भाई, भला दे सकता कौन भाव।।
बड़े दादा को उर में धार, आपने जो महाकाव्य लिखा।
आप दोनों का प्रेम अपार, दिखा हमको सबको ये दिखा।।
भाई से भाई लड़ेंगे नहीं, दिलाते आपको हम विश्वास।
भाई से भाई के लड़ने का, नहीं बनने देंगे इतिहास।।
समग्र जिनवाणी का मर्म, आपने इसमें बतलाया।
जीवन जीना सिखलाया, मुक्ति का मारग दिखलाया।।
ज्ञानियों के हृदय का सार, बताकर किया जो उपकार।
शत-शत वन्दन हम करते, नमन करते हम बारम्बार।।

- अंकित जैन, दिल्ली

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के ८८वें जन्मदिवस के अवसर पर उनके उपकारों का स्मरण करते हुये हम सभी स्नातकों के भाव दादा को समर्पित...

ओ जिनवाणी के मनस् पुत्र!

- गणतंत्र 'ओजस्वी' आगरा

विश्वास जगाया निज पर हाँ, वो काम दिखाया करके हाँ!
जो रहा असंभव जगती को, कितना आसान बनाया हाँ!
तुमने निहाल कितनों को किया, जब दिये तत्त्व के सफल सूत्र!

मुश्किल बाधाओं में डटे रहे, निश्चित होता है समझो!
क्यों व्यर्थ! विकल्प किया करता, विचलित रे मन ये समझो!
अपने जीवन को किया समर्पित, क्या कर पाया कोई पुत्र!

संस्कार दिये, सब ज्ञान दिया, भर-भर जीवन को प्राण दिया!
निःशब्द हुआ, क्या बोलूँ मैं, सब कुछ पूरा ही दान किया!
हम अनगढ़ पत्थर को मूरत दी, कुछ नहीं दे सके हम सभी पुत्र!

पर दृढ़ प्रतिज्ञ हे तर्कवान्, हे गुणरत्नाकर, हे सन्निधान!
ले जन्म धरा को दिये प्राण, मेरे जीवन के शिल्पी महान्!
शब्दों की माल समर्पित है, हो अजर अमर! चैतन्य पुत्र!

भरत के अन्तर्द्वन्द्व के लेखन रहस्य

मुझे लड़ाई इष्ट नही है, हम भाई तो लड़े ही नहीं; कोई दो भाई आपस में लड़ते हैं, उसकी चर्चा भी मुझे दु:ख देती है। इसलिए मैंने यह भरत का अन्तर्द्वन्द्व लिखा कि लोग लड़ना नहीं, नहीं लड़ना सीखें। इसे मैंने अपने आंसुओ में डूब कर लिखा है। **- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल**

लड़ना नहीं है सीखना; नहीं लड़ना, सीखना है।
उलझना नहीं है सीखना; सुलझना सीखना है।।

16वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन शाखा देवनगर–भिण्ड के तत्त्वाधान में दो वर्ष के अन्तराल के बाद दिनांक 3 से 12 जून 2022 तक बाल ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन की प्रेरणा एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सान्निध्य में 16वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर मध्यप्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना जिलों में तथा उत्तरप्रदेश के इटावा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, झांसी, एटा आदि जिलों के 55 स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया।

इस शिविर के निर्देशक पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, सहनिर्देशक पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, प्रमुख संयोजक पुष्पेन्द्रजी जैन, उपप्रमुख संयोजक पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी, देवनगर प्रभारी पण्डित राजीवजी शास्त्री अलवर, पण्डित वैभवजी शास्त्री भिण्ड, संयोजक पण्डित सर्वज्ञ शास्त्री गुढ़ाचन्द्रजी, पण्डित प्रिंस शास्त्री अमरमऊ, पण्डित प्रथम शास्त्री भिण्ड थे।

इस शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर से 31, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाडा से 14, श्री आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा से 13, श्री ज्ञानोदय दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय भोपाल से 12 इसके अतिरिक्त 13 स्नातक विद्वान, 9 स्वाध्यायी विद्वान एवं स्थानीय स्तर पर 38 इसप्रकार कुल 130 विद्वानों का सहयोग धर्मप्रभावना हेतु प्राप्त हुआ।

प्रथम दिन 3 जून 2022 को श्री सीमंधर जिनालय देवनगर भिण्ड में आयोजित समारोह में झण्डारोहण श्रीमान महावीरप्रसादजी जैन परिवार भिण्ड एवं शिविर उद्घाटन पण्डित श्री सुनीलजी शास्त्री ग्वालियर के कर कमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयेजित सभा की अध्यक्षता श्रीमान महेन्द्रजी जैन भिण्ड ने की। मुख्यअतिथि श्री मुकेशजी जैन ग्वालियर, विशिष्ट अतिथि श्री जे. के. जैन साहब भिंड, उमेशजी जैन पोरसा, डॉ. चिन्मयजी जैन, श्रीमती आकांक्षाजी जैन भिण्ड रहे। स्वागताध्यक्ष श्री चक्रेशजी जैन मौ तथा शिविर किट का विमोचन प्रदीपजी जैन भिण्ड ने किया। सभा का संचालन पण्डित सर्वज्ञजी शास्त्री, गुढ़ाचन्द्रजी ने किया। इस अवसर पर बाल ब्र. पण्डित रविन्द्रजी 'आत्मन' का मांगलिक उद्बोधन प्राप्त हुआ।

इस शिविर के आयोजन हेतु मुख्य रूप से ऐसे ग्रामीण स्थानों का चयन किया। जहाँ सम्भवत: कोई विद्वान नहीं पहुँच पाता है। इस शिविर में सभी वर्ग के साधर्मियों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया गया, जिसे शिशु वर्ग, बालवर्ग प्रथम, बालवर्ग द्वितीय, किशोर वर्ग, प्रौढ वर्ग के नाम से कक्षा के रूप में विभाजित किया गया। शिविर में सभी स्थानों पर पाठ्यक्रम के आधार से ही कक्षायें संचालित हुई। सभी स्थानों पर प्रतिदिन प्रात: सामूहिक पूजन, शिविर कक्षायें एवं प्रवचन, दोपहर में सामूहिक कक्षा एवं शाम को शिविर कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, प्रौढ़ कक्षा, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विधान आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस शिविर के निरीक्षण के लिए शिविर संयोजक व फैडरेशन के 12 सदस्यों की 4 निरीक्षण टीम बनाई गईं, टीम के सदस्यों ने सभी जगह पहुँच कर निरीक्षण रिपोर्ट तैयार की तथा आवश्यक दिशानिर्देश दिये। इस शिविर के माध्यम से 5253 बालक–बालिकाओं ने तथा 1099 साधर्मियों ने इसप्रकार कुल 6352 साधर्मियों ने शिविरार्थीबन तत्त्वज्ञान को सीखा।

16वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का समापन समारोह 12 जून सभी शिविर स्थानों पर व सामूहिक समापन समारोह श्री 1008 सीमंधर जिनालय देवनगर भिण्ड में किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री बुद्धसेनजी जैन ने की। मुख्य अतिथि श्री विमलजी जैन, डॉ. सुरेशजी जैन, श्री अरविन्दजी रपरिया, श्री सुनीलजी जैन, श्री नरेशचन्द्रजी जैन, श्री कमलेश जैन, श्री आनन्दजी जैन, श्री अनिलजी जैन व भिण्ड के शास्त्री विद्वानों व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, शाखा देव नगर, भिण्ड के समस्त कार्यकर्ता गण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

श्रुतपंचमी के पावन अवसर पर

कारंजा (लाड़) : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल में दिनांक 4 जून 2022 को श्रुतपंचमी के पावन अवसर पर प्रातः जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं जिनवाणी शोभायात्रा सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् श्रुतपंचमी विधान तथा सायंकाल 'श्रुतपंचमी का महत्त्व' विषय पर पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पुणे के व्याख्यान का लाभ मिला।

साथ ही दिनांक 8 जून, 2022 को समयसार वंदना रथ के पधारने पर समयसार मण्डल विधान एवं सायंकाल देव–शास्त्र–गुरु के महत्त्व पर विशेष व्याख्यान हुए। इस अवसर पर स्थानीय विद्वानों में पं. आलोकजी शास्त्री, पं. चिन्तामनजी भूस, पं. भूपेन्द्रजी शास्त्री, पं. संयमजी शास्त्री आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ।

• पंचम शतक : श्रमण शतक •

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(दोहा)

विचरण में भी श्रम नहीं, शक्ति के अनुसार।
भूमि शोधकर निस्पृही, सीमित करें विहार।।26।।

जाने की जल्दी नहीं, श्रम से रहित विहार।
एक आत्मा ही रहे, चिन्तन का आधार।।27।।

कोइ किसी का न करे, अर अपनी पर्याय।
जो जब जैसी हो प्रभो, सभी सहज स्वीकार।।28।।

उसमें भी बदलाबदल, करने का न भाव।
जब कुछ करना ही नहीं, श्रम का सहज अभाव।।29।।

नग्न दिगम्बर श्रमणजन, भविजन तारणहार।
भविजीवों को मुक्तिमग, सदा बतावनहार।।30।।

मुक्तिमार्ग श्रमरूप न, वह है आनन्दरूप।
सहजरूप सुखरूप है, सहजानन्द स्वरूप।।31।।

मुक्तिमार्ग थित संतजन, रहें सदा सन्तुष्ट।
साम्यभाव सबसे रखें, रुष्ट होंय न तुष्ट।।32।।

जो कुछ है या हो रहा, सबमें समताभाव।
जिनके है वे सन्तजन, सदा जगावनहार।।33।।

जब कोई अनुकूल ना, कोई ना प्रतिकूल।
इष्ट–अनिष्ट की कल्पना, कैसे हो उद्भूत।।34।।

जब सब में समभाव है, सब ही हैं समरूप।
किस को मानें इष्ट हम, और अनिष्ट स्वरूप।।35।।

कोई वस्तु है नहीं, इष्टानिष्ट स्वरूप।
राग–द्वेष कैसे करें, सब वस्तु समरूप।।36।।

राग–द्वेष के वास्ते, नहीं कोई अवकाश।
इसको कहते सन्तजन, सबमें समताभाव।।37।।

सन्तों की सम्पत्ति यह, साम्यभाव समरूप।
सन्तों की यह सम्पदा, है समभाव स्वरूप।।38।।

यह समभाव स्वभाव है, यह ही समताभाव।
राग–द्वेष के परिणमन, का हो पूर्ण अभाव।।39।।

सहजभाव से प्राप्त हो, ऐसा समताभाव।
समताभाव प्रभाव से, साम्यभाव समभाव।।40।।

वीतरागमय भाव से, प्रगटे सहजानन्द।
सहज शान्ति की प्राप्ति हो, प्रगटे परमानन्द।।41।।

सहज शान्ति सुखमयदशा, परमानन्द अपार।
मुक्तिरूप यह भाव ही, मुक्ति मिलावनहार।।42।।

मुनिवर का सुख शान्तिमय, यही भाव समभाव।
साम्यभाव भी यही है, यह है समताभाव।।43।।

साम्यभाव के धनी हैं, सभी श्रमण भगवन्त।
समझो उनके आ गया, भवसागर का अन्त।।44।।

सम्यग्दृष्टि जीव सब, निर्भय हों निशंक।
उन्हें प्रभावित न करें, आशंका आतंक।।45।।

सभी द्रव्य स्वाधीन हैं, स्वयं परिणमित होंय।
अर अपने परिणमन के, कर्त्ता–धर्त्ता होंय।।46।।

जब जो कुछ जिस द्रव्य का, जैसा होना होय।
तब तैसा उस द्रव्य का, सदा परिणमन होय।।47।।

अरे सुनिश्चित है सभी, जाना है जिनदेव।
सब द्रव्यों का परिणमन, होता है स्वयमेव।।48।।

सब द्रव्यों के परिणमन, सभी ज्ञान के ज्ञेय।
सर्वज्ञों के प्रतिसमय, बनते हैं स्वयमेव।।49।।

अल्पज्ञों के भी नियत, होते हैं सब ज्ञेय।
स्वसमय अनुसार ही, वे ही बनते ज्ञेय।।50।।

उनमें भी बदलाबदल, ना हो किसीप्रकार।
जो होना है जो नियत, होगा उसीप्रकार।।51।।

(क्रमशः)

प्रश्नोत्तरमाला

20 समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न 166 – 'असंयुक्त' विशेषण के माध्यम से क्या समझाया गया है? विस्तार से बताइए।

उत्तर – असंयुक्त विशेषण के माध्यम से शुद्धनय के विषयभूत आत्मा को रागादि विकारी पर्यायों से भिन्न बताया गया है। जिसप्रकार शीतलता जल का स्वभाव है और गर्म होना संयोगीभाव है, विभावभाव है; उसीप्रकार रागादि से असंयुक्त रहना आत्मा का स्वभाव है और रागादि से संयुक्त होना आत्मा का विभावभाव है। शुद्धनय का विषयभूत आत्मा रागादि से असंयुक्त ही है।

प्रश्न 167 – कार्य परमात्मा और कारण परमात्मा में क्या अंतर है?

उत्तर – अरहंत–सिद्ध कार्य परमात्मा कहलाते हैं। इनकी ही मूर्तियाँ मंदिर में विराजमान होती हैं। इन मूर्तियों के माध्यम से हम मूर्तिमान अरहंत–सिद्ध परमात्मा की उपासना, भक्ति, पूजन करते हैं। देहदेवल (देहरूपी मंदिर) में विराजमान शुद्धनय का विषयभूत निज आत्मा भी परमात्मा है, यही निजात्मा कारण परमात्मा कहलाता है। निज आत्मा दर्शन को ही सम्यग्दर्शन कहते हैं और इससे किसी कर्म का बंध नहीं होता; अपितु कर्मबंधन कटते हैं, बंध का अभाव होता है। जबकि मंदिर में विराजमान परमात्माओं के दर्शन से, देवदर्शन से सातिशय पुण्य का बंध होता है।

प्रश्न 168 – किसकी आराधना परमधर्म है?

उत्तर – अबद्धस्पष्ट, अनन्य, नियत, अविशेष, असंयुक्त, अनुभवगम्य निजातमा ही एकमात्र आराध्य है और उसकी आराधना ही परमधर्म है।

प्रश्न 169 – आत्मानुभूति किसे कहते हैं?

उत्तर – शुद्धनय के विषयभूत आत्मा की अनुभूति को ही आत्मानुभूति कहते हैं।

प्रश्न 170 – क्या आत्मानुभूति और ज्ञानाभूति में अंतर है? कारण सहित बताइए।

उत्तर – नहीं, आत्मानुभूति और ज्ञानानुभूति दोनों एक ही हैं; इनमें भेद तो मात्र नाम का ही है। जब ज्ञान और आत्मा को एक मानकर बात की जाती है, तब आत्मा की अनुभूति को ही ज्ञान की अनुभूति कहा जाता है। आत्मा गुणी है और ज्ञान आत्मा का गुण। गुण–गुणी का अभेद मानकर आत्मानुभूति को ज्ञानानुभूति कहा जाता है। (क्रमशः)

जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

उदयपुर : यहाँ कुन्दकुन्द कहान वीतराग–विज्ञान शिक्षण समिति के तत्वावधान में शाश्वत धाम में चल रहे ७ दिवसीय आवासीय जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का १२ जून को समापन समारोह हुआ, जिसमें १३५ बच्चों ने सहभागिता निभाई।

शिक्षण समिति के महामंत्री नरेन्द्रजी दलावत ने बताया कि श्रद्धेय कस्तूरचन्दजी सिंघवी की पुण्य स्मृति में श्री श्याम एस. सिंघवी–संयम सिंघवी–दिव्यम सिंघवी एवं समस्त परिवार उदयपुर शिविर के आमंत्रणकर्ता थे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भोगीलालजी भदावत ने की। मुख्य अतिथि श्री श्याम एस. सिंघवी एवं विशिष्ट अतिथि ताराचन्दजी जैन, श्री हरीशजी कोडिया, भंवरलालजी अखावत, शांतिलालजी अखावत, मुकेशजी सिंघवी, कचरुलालजी मेहता, सूरजमलजी फान्दोत, जीवनलालजी जैन कुराबड़, भावेशजी कालिका, राजमलजी गोदडोत एवं नरेंद्रजी दलावत थे। समिति के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी जैन ने शिविर की रूपरेखा बताई एवं अतिथियों का स्वागत किया। शिविर के निर्देशक डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री ने शिक्षण शिविर की उपयोगिता बताते हुए कहा कि जहाँ बच्चे एक दिन भी रुकना पसंद नहीं करते वहाँ शिविर में आए बच्चों ने सात दिवसीय आवासीय शिविर में सदाचार नैतिकता एवं जैन संस्कृति का अध्ययन किया।

डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने शिविर के परिणाम घोषित करते हुए बताया कि **शिशु वर्ग** में मितांशी जैन प्रथम, मिष्टि जैन द्वितीय, अंशिका जैन तृतीय स्थान पर रही। **बालवर्ग प्रथम** में प्रथम दृष्टा जैन, द्वितीय विधि जैन, तृतीय मानवी जैन रही। **बालवर्ग द्वितीय** में प्रथम अक्षत जैन, द्वितीय केवल्य जैन, तृतीय हर्षित जैन रहे। **किशोर वर्ग प्रथम** में प्रथम तनिषा जैन, द्वितीय राधिका जैन, तृतीय यशी जैन रही। **किशोर वर्ग द्वितीय** में प्रथम जैनिल जैन, द्वितीय वृतिका जैन, तृतीय जिनय ने जैन रहे। शिविर के आदर्श बालक जैनिल जैन व आदर्श बालिका प्रेक्षा जैन रही। कार्यक्रम का संचालन पण्डित ऋषभजी शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर श्री राजकुमारजी भोरावत, श्री भावेशजी कालिका, श्री राजमलजी गोदडोत, पं. नृपेन्द्रजी जैन, पं. ऋषभजी शास्त्री, श्री खेमचंदजी जैनदर्शनाचार्य, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, पं. संदीपजी शास्त्री, पं. तपिशजी शास्त्री, पं. गजेन्द्रजी शास्त्री, पं. अंकितजी शास्त्री, पं. जयेशजी शास्त्री, पं. निलेशजी शास्त्री, दीपकजी शास्त्री, हिमालयजी जैन, अनुभवजी शास्त्री, हितंकरजी शास्त्री, संवेग शास्त्री, भव्य शास्त्री, डॉ. ममताजी जैन, श्रीमती नीलमजी जैन, गरिमा जैन, श्रीमती भगवतीजी जैन, डॉ. सीमाजी जैन, श्रीमती हीनाजी जैन व सिद्धि जैन उपस्थित रहे।

श्री षट्खण्डागम आध्यात्मिक शिविर सम्पन्न

सोनागिर सिद्धक्षेत्र में दिनांक 1 से 8 जून 2022 तक अखिल भारतीय जैन युवा फेडेरेशन, जैनिजम थिंकर संस्थान दिल्ली, श्री परमागम श्रावक ट्रस्ट, आचार्य कुन्दकुन्द नगर सिद्धक्षेत्र सोनागिर एवं कुन्दकुन्द कहान प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आचार्य धरसेन द्वारा उपदेशित तथा आचार्य पुष्पदन्त एवं आचार्य भूतबलि द्वारा लिपिबद्ध श्री षट्खंडागम आध्यात्मिक शिक्षिण शिविर, 13वाँ श्रुतावतरण महोत्सव एवं सत्प्ररूपणा विधान का भव्य आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। प्रवचनकार के रूप में पण्डित जे.पी. जी दोषी, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद्य जयपुर, पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर व बाल ब्र. विमलाबेन जबलपुर थे। विधानचार्य के रूप में पण्डित अनिलजी धवल व पण्डित दीपकजी धवल रहे।

सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं श्री नीरजजी जैन दिल्ली निर्देशन में संचालित हुआ।

श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्न

सोनागिरजी (सागर) : यहाँ 22 से 28 मई 2022 तक सिद्धचक्र महामण्डल विधान सानन्द सम्पन्न हुआ, जिसमें पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित संजीवजी उस्मानपुर, पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना एवं पण्डित संदेशजी शास्त्री उस्मानपुर का समागम रहा।

प्रतिदिन प्रात: सिद्धचक्र विधान की जयमाला एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक विषय पर पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के व्याख्यान एवं दोपहर में पण्डित सुरेशजी शास्त्री गुना के प्रवचनों के अतिरिक्त आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति, भजन संध्या, संगीतमय बोध कथा आदि अनेक रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा ने दी। परीक्षा का परिणाम निम्नप्रकार रहा - बालबोध प्रशिक्षण में 146 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जिसके अन्तर्गत 107 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 73 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये, 14 छात्र द्वितीय श्रेणी से, 25 छात्र तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुये। बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान सुश्री सजल जैन सुपुत्री श्री सुनीलजी जैन इन्दौर, द्वितीय स्थान श्रीमती प्रज्ञाजी जैन धर्मपत्नी श्री आशीषजी जैन टीकमगढ़ एवं तृतीय स्थान अचल जैन पुत्रश्री अशोक जैन उज्जैन व गौरव जैन पुत्रश्री खुशपतजी जैन मुम्बई ने प्राप्त किया। प्रवेशिका प्रशिक्षण में 29 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जिसके अन्तर्गत 27 छात्र प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, जिसमें 16 छात्र 75% से अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुये; 2 छात्र तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में तन्दुल जैन पुत्रश्री सचिनजी जैन दिल्ली प्रथम, आकाश जैन पुत्रश्री प्रकाशजी जैन कोटा द्वितीय व दिव्यांश जैन पुत्रश्री देवेन्द्रकुमारजी जैन सागर तृतीय स्थान पर रहे।

डॉ. भारिल्ल ने दीक्षान्त भाषण में कहा कि यह दीक्षा का अन्त है, शिक्षा का अन्त नहीं; अत: आप सभी को पूरे जीवनभर स्वयं तत्त्वज्ञान को सीखना है और यथासंभव प्रचार-प्रसार भी करना है। कार्यक्रम का संचालन श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया।

हार्दिक शुभकामनाएँ

अरिहन्त जागृति मंच, पुणे द्वारा भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के अवसर पर अखिल भारतीय स्तर पर 'खुली निबंध स्पर्धा-2022' का आयोजन किया गया। श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्र **सर्वज्ञ जैन, गुढ़ाचन्द्रजी** ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। एतदर्थ जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2022

प्रति,